भगवत् कृपा

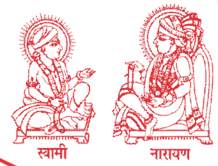

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 11 | गुरुवार, 26.11.98 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

निर्वासनिक होने का उपाय

श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री श्लोक 116 में भक्ति करने की रीत बताई है। तीन देह, तीन अवस्था, तीन गुण से अलग स्वयं का स्वरूप ब्रह्म समझ कर ही भक्ति करने को कहा है और ब्रह्मरुप रहता हुआ स्वामिश्रीजी की जो निरन्तर सेवा करे–उसे ही मुक्त गिना है (श्लोक 121) कि ऐसी आत्यंतिकी मुक्ति पाने के लिए हर एक जीवात्मा को ब्रह्मरुप तो होना ही पड़ता है। यह सनातन सिद्धांत श्रीजी ने बताया है। सो, ब्रह्मरुप होने के लिए निर्वासनिक और भगवान को अखंड धारण करे हुए प्रगट संत की जरूरत पड़ती है। वड़वानल अग्निसमान ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत वच. वड़. 19-10 के मुताबिक भरतखंड में विचरण जरुर-जरुर कर रहे होते हैं। उसकी पहचान हो जाए, तो जीव भक्त बनता है और आत्यंतिकी मुक्ति को जीतेजी प्राप्त करता है।

अब ब्रह्मरुप होने के लिए पहला कदम निर्वासनिकभाव का है। वह सिद्ध होने के बाद एकांतिकभाव सिद्ध होता है और उसके बाद ही आत्मा में परमात्मा को धारण करने की शक्ति आती है जिसे अंतिम प्रकार का सत्संग प्राप्त हुआ कहा जाये। सो, वच. अमदावाद-2 के मुताबिक ज्ञानप्रलय करने और ब्रह्म-परब्रह्म के पाँचवें भेद के रहस्य की बात समझने के लिए एकांतिक के लक्षणयुक्त बनना ही पड़ेगा। अनन्यभक्त होने के बाद निर्वासनिकभाव सिद्ध होने पर ही एकांतिक भक्त हो सकेंगे, जिसके लिए प्रगट सत्पुरुष का होना खूब महत्व का व अत्यंत आवश्यक माना जाता है। ऐसी ब्राह्मीस्थिति में अखंड वर्तते संत में ही असाधारण प्रीति एवं वचन में विश्वास करने का श्रीजी महाराज ने भी वच. वरताल 11 में बताया है। तो, वच. प्र. 27-अंत्य. 26 वगैरह पर विचार करके देखना।

महाराज और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने वचनामृत तथा स्वामी की बात एवं वेदरस में निर्वासनिक होने के बड़े चार उपाय बताए हैं और प.पू. सद्गुरु शास्त्रीजी महाराज तथा प्रगट गुरुवर्य योगीजी महाराज ने आसान से आसान पाँचवां मार्ग बताया है, जिसे सभी को सोच-समझ कर ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए; क्योंकि प्रगट संत के वचन से ही विषयों के अव्यक्त राग टलते हैं (वच. प्र. 60) व निर्वासनिक हो सकते हैं। फलस्वरूप-ब्रह्मरुप होकर भक्ति करनी आती है और शिक्षापत्री श्लोक 121 के मुताबिक जीतेजी आत्यंतिक मुक्ति पाई जा सकती है।

मुख्य पाँच उपायः-

(1) आत्मनिष्ठा और भगवान का अतिशय माहात्म्य-वच. प्र. 73, प्र. 60, 11, अंत्य. 18 विचारना।

(2) पंचविषय में अत्यंत अरुचि, आत्मनिष्ठा की अतिशय दृढ़ता और भगवान की अपार महिमा समझनी। यहां पर सर्वोपरि उपासना समझ कर आज्ञा पालने की बात मुख्य है। सावधानी से सत्पुरुष की आज्ञा में रहकर दृढ़ निष्ठा रखते हुए भजन करें तो विषय उड़ जाते हैं।

(3) ध्यान और वचन-वच. कारियाणी 12 व अंत्य. 39 के मुताबिक अव्यक्त राग टालने के लिए संत की स्मृति सहित स्वामिश्रीजी का ध्यान और वचन धारने पड़ते हैं, जिससे कारण शरीर उड़ जाएगा। वच. मध्य 31 तथा अंत्य. 39 के मुताबिक ब्रह्म का मनन द्वारा संग करके, अंतर्दृष्टि करके, सोच को पाकर आत्मा-परमात्मा की लगनी लगा दें और वचन में सम्पूर्ण विश्वास रखकर लग पड़ें तो तत्काल निर्वासनिक हो जाएंगे, उसमें ज़रा भी संदेह नहीं।

(4) प्रगट संत की क्रिया जँचे, उसका स्वरूप निर्दोष माना जाए और वो जैसा कहे वैसा करे तब भी वासना सरलता से जीती जा सकती है-वर्ना तप, त्याग, व्रत, दान या भले कितने ही प्रयत्न करें, अरे! निर्विकल्प समाधि भी चाहे होती हो, पर विषयों के अव्यक्त राग टले हुए दिखाई

नहीं देते और वासना के कारण जीव दोबारा देह धरता है। प्रगट संत प. पू. योगीजी महाराज जैसे स्वरूप को निर्दोष समझाने से और उनकी सभी क्रियाएं जँचे व वचन माना जाए तो जीव ब्रह्मरुप हो जाये और जीतेजी वासना रहित हो जाता है। लेकिन ऐसे संत में अखंड दिव्यभाव रहे–वह अति कठिन बात है। वर्ना तो सहज में ही बिना किसी साधन के वासना जितवा देंगे।

(5) मृत्युलोक में कलियुग में थोड़े ही समय जीना और निर्वासनिक होकर भजन करना आ जाए उसके लिए प.पू. शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य योगीजी महाराज ने हमें 'सत्संग' में–सत्पुरुष में आत्मबुद्धि रखते हुए निर्दोषबुद्धि और हरिभक्तों में दिव्यभाव रखने का सरल से सरल मार्ग बताया है। यह सभी के लिए आसान पड़े–ऐसा है। सिर्फ एक श्रीजी का आसरा रखकर प्रगट संत में अखंड निर्दोषबुद्धि रखकर अतिशय सेवा किया करें और उसमें निष्ठा वाले हरिभक्तों में दिव्यभाव रखकर केवल उनके गुण ही गाया करें उतने से जीव निर्वासनिक होकर ब्रह्मरुप हो जाता है।

इन उपायों के किसी भी प्रकार में हमें सुगमता नहीं पड़ती हो तो आखिरकार एक मार्ग बाकी रहता है। वच. प्र.58, मध्य 7 के मुताबिक वह अपनाना। यहां 'मैं आपका ही हूँ' और 'आप मेरे हो' यह दृढ़तापूर्वक मानकर खुद के ही दोष देखते रहकर गुलाम की तरह सेवा किया करें तो भी जीव निर्वासनिक हो जाता है। सो, ये सरल तरीके से सत्पुरुष द्वारा सभी को सिद्ध करना चाहिए और जीतेजी ही ब्रह्मरूप होकर सर्वोपरि उपासना दृढ़ करके स्वधर्मयुक्त जीवन जीना जिससे निर्गुण सुख अनुभव होगा, भोग पाओगे और प्राप्त करोगे। सभी प्रसन्न रहना, भूलचूक माफ करना।

प.पू.काकाजी महाराज
दिसम्बर, 1955

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

अन्नकूट—वार्षिक महाभोग

नई उमंग के साथ नया वर्ष 21 अक्टूबर को प्रारम्भ हुआ...हर साल की तरह ठाकुरजी को महाभोग लगाकर नए वर्ष की शुरुआत करी। 'अनिर्देश' के पीछे पार्क में प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में नए वर्ष निमित्त सभा का आयोजन किया गया। अमदावाद, राजकोट, वापी, सुरत, भरुच, मुंबई, लुधियाना, जगरांव, अमृतसर से भक्त समुदाय–कई नए मुक्त–मुमुक्षु दर्शन, सेवा, समागम व स्मृति का अद्भुत लाभ लेने एक दिन पहले ही आ गए थे। प.पू. गुरुजी से एक अलग लगाव के वश **श्री रोमेश भंडारी साहेब** (दिल्ली व यू.पी. के भूतपूर्व राज्यपाल) भी आरती का लाभ लेने आ पहुँचे...... पू. निमित्तस्वामी, प.भ. राकेशभाई व प.भ. विनोद (पंजाब) ने स्वामिनारायण की धून्य व भजन द्वारा सभा की मंगल शुरुआत करी। तत्पश्चात् प.भ. वच्छराजभाई, प.भ. **एन.जी. पटेल साहेब (अमदावाद)**, प.भ. विकास मल्कानी वगैरह ने सभा को सम्बोधित किया और.....नए वर्ष पर सभी भक्तों पर आशिष वर्षा करने हेतु प.पू. गुरुजी ने दीवाली के कार्ड का निरुपण करते हुए बात करी–

'.....वच्छराज ने बहुत अच्छी बात करी कि हमें पता नहीं लगता है लेकिन 10-15 साल से सत्संग में जो हैं वो नोट करें कि पहले हमारी सेन्टर ऑफ लाईफ क्या थी? महत्त्वकांक्षा क्या थी? और अब ये कब बदल गई वो पता नहीं लगेगा। समय की रफ्तार की तरह काम चलता है। पता लगेगा भी नहीं और भीतर से जीवन का केन्द्र कब बदल जाएगा वो ख्याल भी नहीं पड़ेगा।

.......भावि के लिए कैसे कदम उठाने उसके बारे भी हम प्लानिंग करके काम करेंगे। लेकिन हमारे में और जगत के लोगों में क्या फर्क पड़ेगा वो यहां खास बताया है। गुजरात के अखबारों में पढ़ेंगे तो उसमें एक पेज आता है–आवतु वर्ष केवुं जशे? हर एक को ये होगा कि अगला साल....? कई ज्योतिषी के पास भी जाएंगे कि भई अगला साल कैसा जाएगा? **भगवान के सच्चे आश्रित होंगे वो इस बारे सोचेंगे ही नहीं। उन्हें एक भरोसा रहेगा कि हमारे प्रभु ने जो सोचा होगा वैसा हमारा श्रेय होने ही वाला है। प्रभु मेरे हैं–हम उनके हैं। वो मेरा अहित होने ही नहीं देंगे। यहाँ हमारे में और जगत के लोगों में फर्क पड़ गया !** इसलिए ये कार्ड में लिखा है कि ये प्रश्नार्थ जगत के लोगों के लिए है। टेन्शन-सोच जगत के लोगों के लिए है। हमारे ऊपर काल, कर्म, माया की हकूमत है ही नहीं। **ज्योतिषी ये बता पाएगा कि अगले साल क्या होगा? लेकिन वह उसे बदल नहीं पाएगा–नियती को !** ये कार्ड में यह बात खास एम्फेसाईस करी है। हम बोलते जरुर हैं, लेकिन मानते नहीं हैं। गुजराती में भी कहावत है–'लेख पर मेख मारे भगवाननो साचो साधु'! बोलेंगे हम जरुर; लेकिन भीतर में थोड़ा-सा डर जरुर रहेगा। आखिर यह तो रहेगा कि भले ही साधु को हमारा कितना ही अच्छा करना हो लेकिन हम ही ठीक नहीं चलते तो फिर साधु भी क्या करेगा? अगर वो साधु क्या करेगा–ऐसा है, तो ऐसे साधु की हमें कोई जरुरत नहीं है। गुणातीतानंदस्वामी की एक बात है–'आश्रित के प्रारब्ध में ऐसा कुछ भुगतना हो–उसने कोई गल्ती करी हो

उसका भुगतना हो, तो वो साधु उसका प्रायश्चित अपने सिर लेकर उसे मुक्त करता है।' ऐसे साधु की परम्परा अपने गुणातीत समाज को बख़्शिश में मिली हुई है। इसलिए आज से इस बारे सब केयरफ्री होकर जाएं। पर केयरलेस नहीं। **केयरलेस और केयरफ्री में फर्क है। केयरलेस होता है लापरवाह, केयरफ्री होता है निश्चिंत।** एक बार मैंने चिंता और फिकर की भी ऐसी बात करी थी। सो, प्रश्नार्थ तो जगत के जीवों के लिए है। हम तो ठहरे भगवान के भक्त !

भगवान के भक्त की व्याख्या भी स्वामिनारायण ने दी है। जो रोज़ मंदिर जाए, रोज़ टीला-टपका (चांदला) करे, व्रत करा करे, दान करे, यज्ञ करे, पाठ करा करे—उसको भक्त नहीं बोला। **मानवस्वरूप में भगवान को अखंड रखी हुई विभूति को जो पहचाने वो भक्त** ! फिर चाहे वो कैसा भी हो ! देखो, हनुमान ने राम को पहचाना; तो भक्त ! आज हम सब पूजा करते हैं उसकी। असल में तो शर्म आनी चाहिए। हम इंसान और वो बन्दर ! नहा-धोकर तो हम रहते हैं। वो तो नहाता-धोता भी नहीं। तब भी हमें उसके पांव छूने हैं। क्योंकि उसने रामचंद्रजी को पहचाने—जब रामचंद्रजी थे ! इसी तरह अर्जुन ने कृष्ण को पहचाना। तो आज अर्जुन की मूर्ति बैठाई गई है। स्वामिनारायण ने कैसी रहस्य की बात कर दी? आमतौर पर ऐसी व्याख्या होती है कि टीका लगाया हो, हाथ में थैला-माला पकड़ी हो वो भगवान के भक्त। भगवान स्वामिनारायण ने कहा कि ऐसे स्वरूप की जिसे पहचान हो-वह भक्त ! **जानकारी नहीं—पहचान** ! पहचान होती है तो अपना काम होता है। जिसके साथ पहचान हो तो वो हमारा काम कर देते हैं। यह बात प.पू. काकाजी बार-बार कहा करते थे। यूं हम तो ठहरे भगवान के भक्त ! फिर ऐसे मुँह लटकाए-थोबड़ा चढ़ाए बैठे रहें—किसी और सोच में बैठे रहें ! यहां सभा में भी बैठे होंगे लेकिन हमारा माईन्ड तो कहाँ का कहाँ घूमता होगा? भूल जाते हैं कि—हमारे ऊपर काल, कर्म, माया की हकूमत चलती ही नहीं है। हमें प्रभु का स्वरूप मिला, पर हम उसकी आज्ञा में रहते कि नहीं? रहते हैं पर उसके साथ ज़िद्द भी कर जाते हैं—उसके साथ रुठा भी करते हों। रोज़-रोज़ मनाना-करना चलता रहता है। लेकिन जानते तो हैं कि मालिक ये हैं। देखो हम ये रोज पढ़ते हैं। हर साल मैं ये बात करता हूँ, लेकिन जब छोटा भी कष्ट होता है तो ऐसा होता है कि टलेगा कि नहीं? **भीतर में एक डर-सा रहता है, वह हमारा छुपा नास्तिकभाव है या अपना संदेहात्मक मन है। ये जो बातें सुनते हैं तब होता है कि संतों का तो यह एक पेशा है कि बातें करनी हैं। वो तो करते रहेंगे। सच में ऐसा होता होगा क्या?** सच में हमारी रक्षा होती होगी? हमारे कर्म ही—करतूत ही ऐसे हैं, हमने करा ही ऐसा है। अरे ! करे हैं तभी तो इनके पास आए हैं। हॉस्पीटल में कौन जाता है? दारासिंह जाएगा? हट्टा-कट्टा जाएगा? वो तो बीमार ही जाएगा। हमने गड़बड़ करी हुई है इसीलिए तो हम आए हैं। मुझे बराबर याद है कि एक फैक्टरी पर योगीजी महाराज को ले गए थे। वहाँ फैक्टरी की चेयर पर बैठ कर योगीजी महाराज ने पूछा कि—यह फैक्टरी चलती है? सेवक ने कह दिया कि फैक्टरी चलती होती तो तुम्हें बुलाते क्यों? नहीं चलती है इसलिए तो बुलाया है। यूं हम लोग भी गड़बड़ करे हुए हैं। 'ह्यूमन ईज़ टु एर, डिवाईन ईज़ टु फरगिव'- अंग्रेजी में कहावत है। लेकिन इसके आगे भी है कि 'नॉट ओन्ली फरगिव, बट फरगेट'। हम किसी को फरगिव तो कर देंगे, पर मन में वो चीज बैठी रहेगी। यह प्रभु का उपशम-ऐश्वर्य है। वो देखता ही नहीं, तो भूलने की बात ही कहाँ रही? **भगवान और संत के प्रति हमें ये जो मायिक भाव है वो निकल जाए तो 90% से ऊपर अपना काम हो गया। लेकिन यहाँ हमें अपना सन्देहात्मक मन छोड़ना पड़ता है। मन संदेह करता है कि ये भले कहें लेकिन ऐसा कुछ नहीं है।** ऐसा कुछ नहीं है तो हम कैसे टिके हुए हैं?

हम यह बात करते हैं तो कहोगे कि स्वामिनारायण वाले तो अपनी बात करा करते हैं। **माँ शारदामणि** ने कहा है कि ये भगवान का केस हो गया। अब इस पर किसी का कुछ चलेगा नहीं। विधात्री भी पीछे हठ कर जाती है। गुणातीतानंदस्वामी ने इसे और ढंग से कहा। घर में दो भाई होंगे तो भी ऐसा रहेगा कि जैसे संत कहते हैं वैसा चलता रहता है, इसलिए संत को उसकी फेवर ज्यादा रहेगी। **अरे ! गुण देख कर भगत से रिश्ता रखे वो फिर पहुँचा हुआ साधु नहीं है।** तुम अच्छे हो और तुम्हारे साथ बना कर रखे वो तो हर कोई रखेगा। लेकिन संत हर एक के साथ सरीखा रिश्ता रखता है। तो, फिर फर्क कहाँ पड़ता है? लेने में फर्क पड़ता है। काकाजी इसे अलग ढंग से कहा करते थे। समुन्दर में पानी तो खूब है। कोई लेने जाए तो समुन्दर ऐसा नहीं कहता कि मैं तुम्हें इतना ही पानी दूँगा। लेकिन जैसी अपनी गुंजाईश इतना पानी हम अन्दर से ले सकते हैं। **हमारे गुनाह-मिसबिहेव को संत देखते ही नहीं हैं।** हमें डर रहता है वह हमारा कान्शियस बाईट करता है। पर, वो तो देखता ही नहीं है। कैसा उदाहरण दिया कि—जैसे कोई सद्गृहस्थ गल्ती से रुम में चले जाए जहाँ अपनी माँ हो—बहन हो—बेटी हो, वह कपड़े बदलती हो— तो क्या हम खड़े रहेंगे? तुरन्त दरवाजा बंद करके वापिस आ जाएंगे। इसी तरह भगवान अपने भक्त के मिसबिहेव को देखते ही नहीं; जिसका हमें बहुत फील होता है—हर्ट होता है। **हमें प्रकृति पुरुष तक का भार है—प्रभाव है। साधु सिर्फ संबंध ही देखता है।** बाकी और कुछ देखता ही नहीं है। **साधु को दुनिया की कोई पड़ी ही नहीं होती।**

एक छोटी-सी बात करता हूँ। मैंने **एन.जी.** को कहा था कि मैं एयरपोर्ट लेने आऊँगा—याद है? तो क्या मेरे में अक्कल नहीं है कि यहां बैठे हुए कईयों को ऐसा फील हुआ होगा कि—हाँ, यह पैसा वाला आदमी है ना? गुरुजी इसको लेने एयरपोर्ट जाएंगे। पर, पैसा वाला—गरीब उसकी कोई बात ही नहीं।

मैंने बड़े पुरुषों का जीवन देखा हुआ है। उनसे सीखा है हमें किस तरह चलना है? मुझे बराबर याद है; मल्कानी को भी याद होगा। हम काकाजी के अंतर्धान होने के बाद पहली बार विद्यानगर गए थे। तो **पप्पाजी विद्यानगर से अमदावाद एयरपोर्ट रिसीव करने आए थे सुबह 7.00 बजे** ! इन्हें देखकर मैं सन्न हो गया कि पप्पाजी कहाँ से? स्वाभाविक मैंने तो दंडवत् करे और पप्पाजी को मैंने कहा आप क्यों आए? तो बोले– मैं तो काकाजी को लेने आया हूँ! देखो वो सिखाते हैं हमें कि एक संबंध देखो। ऐसे ही **एन.जी. का एक संबंध है जिसका इन्डीकेशन महाराज ने हमें दिया हुआ है।** वे भले खुद भी मानें कि हम नए हैं। आज ही आए हैं, नए-नए हैं। लेकिन ये होंगे पुराने! ये इन्डीकेशन कैसा? प्रहलादभाई के साथ वे पहली बार आये थे तब मैं तो इनको जानता भी नहीं था। प्रहलादभाई तो ए-103 में दाखिल हुए, पीछे-पीछे ये आ रहे थे। पता नहीं कैसे? आप लोग इस बात को मिसअन्डरस्टेन्ड-मिसइन्टरप्रिट नहीं करना। मैं एक बात खोल कर समझाता हूँ कि मैं एन.जी. के पीछे क्यों पड़ा हुआ हूँ? एकदम मेरे मुँह से निकल गया-आओ नरसिंहभाई ! तो वो एकदम सन्न हो गए। एकदम वे बोले कि मेरा नाम तुम्हें कैसे पता गुरुजी? पहली बार ही आए थे। ऐसा भी नहीं कि बीफोर इन्टीमेशन थी। ये बात सुन कर मैं भी चकाचौंध हो गया कि मेरे मुँह से नरसिंहभाई कैसे निकला? तब से मैं मानता हूँ कि महाराज ने मुझे इन्डीकेशन दिया कि यह अपना है। इसको संभाले रखना। मैं इसीलिये अमदावाद जाऊँ तो फोन करता हूँ, बुलाता-करता हूँ। सो, मैंने कहा था कि मैं एयरपोर्ट आऊँगा। यूं मैंने एक संबंध याद रखा हुआ है।

इस तरह महाराज सूझ देते हैं–प्रेरणा देते हैं। प्रेरणा देते हैं तो आकाश में से ऐसे आवाज़ थोड़े आती है? मैं कई बार कहता हूँ कि शास्त्रों में कई चीज़ लिखी होती है जो समझनी होती हैं। जैसे कि कृष्ण का जन्म हुआ और वासुदेवजी उसे गोकुल ले जाने के लिए निकले तो जमुनाजी ने मार्ग दिया। पिक्चर में बताते हैं कि पानी के दो–फांटे हो गए और मार्ग दिया। ऐसा कुछ नहीं होता। हाँ, पानी उतर गया जिससे कि वासुदेवजी आराम से चलकर जा पायें। इसी तरह हमें क्या करना है, क्या नहीं करना है– वो भगवान सूझ दे देंगे। सूझ किस प्रकार देनी? वो प्रभु जानते हैं। वो हर एक के लिए अलग-अलग ढंग– तरीका होता है....

जब वो देखता ही नहीं कि हमने क्या करा है, तो फिर हमें डरने की क्या जरुरत है? इसका मतलब यह नहीं कि हम वो करते ही रहें–करते ही रहें। तो, फिर हम भगत नहीं ठहरे–हम ढीठ ठहरे।

काकाजी आज भी हों तो यह सेन्टेन्स बोले बिना रहते नहीं कि आज तक का माफ.... **अभी फर्क यह पड़ गया कि हमें काकाजी से प्रार्थना करनी है कि काकाजी आज तक का माफ कर दो, अभी हम दोबारा नहीं करेंगे।** तो अब- जब से जगे तब से सुबह और मैं तो कहता हूँ–कई बार हमें होता है कि आज तक का तो माफ हुआ, लेकिन इतना टाईम बिगाड़ा उसका क्या? नहीं– रीएमबर्समेन्ट के साथ सब मिल जाता है..... ग्रह-पनौती, जादू-टोना, भूत-पिशाच, प्रारब्ध-कर्म–ये तो हमें भुगतना ही है ऐसा नहीं है। हम इस रास्ते चले हैं ना? तो हमारे अन्दर दोष पड़े हुए हैं–उनका भी खूब बोझ रहता है। काकाजी कहते थे कि तत्त्व के दोषों की चिंता नहीं करो। वो तो यूं फूंक मार कर टाल देंगे। लेकिन भगवान के भक्तों की झंझट–इनके साथ की बराबरी में मत पड़ो। और...... ये हम करते रहते हैं !

....इतनी अच्छी सभा चलती है उसमें भी तुम्हें जवांई (उबासी) आए.... अरे ! सुबह तो हम जल्दी जगते हैं। फिर मुझे आएगी, तो तुम कहोगे कि आपको आती है, तो वो तो तुम लोगों को देखकर आती है।

......सिंह की भाँति ! सिंह आगे चलता है, पीछे देखता रहता है। **यूं हमें आगे कदम जरुर उठाने हैं, भीतर में अंतर्दृष्टि भी करनी है कि क्या हम प्रभु की मर्जी के मुताबिक चले हैं?** आज सत्संग में एक छोटे से छोटे बच्चे को समझदारी आई हुई है। वो सोचता है कि ये करेंगे तो काकाजी राजी होंगे-ये करेंगे तो काकाजी को नहीं जँचेगा। ये विजयपाल का लड़का है-विपिन! मैंने उसे पूछा कि तू रुकने वाला है कि जाने वाला है। उसने एकदम कह दिया-मैं तो जाऊँगा। लेकिन उसका फेस बता रहा था कि उसको अन्दर फील हो गया कि मैंने गलत जवाब दे दिया। देखो, छोटे से छोटे बच्चे को भी पता लगता है कि मुझे यूँ कहना चाहिए कि आप कहें वो करुंगा या जो पापा कहेंगे वो करुंगा। वो दो बार तो मुझे एक्सप्लेनेशन देकर गया कि पापा कह कर गए ना कि जाना है इसलिए गुरुजी मैं कह कर गया कि मैं जाऊँगा। उसे कान्शियस बाईट कर गई कि मैंने आज गलत जवाब दिया। देखो अब छोटे बच्चे की इतनी समझ है तो हमें नहीं क्या? लेकिन कहते हैं ना जागते सू-सू कर देते हैं कि हमें यहीं करना है। उसकी बात अलग है। सो, सचमुच भगवान के होकर-ये हमें खुद को सोचना पड़े कि हम सचमुच भगवान के हैं? सचमुच हैं? ओनेस्टली हैं? और ओनेस्टली हैं तो फिर देखना पड़े कि टोटली हैं? फिर, भावि में बेहिचक कदम उठाएं।

कई मुझे पूछने आते हैं कि ये करें? तो मैं कहता हूँ कि हाँ भई करो ! क्योंकि मुझे एक चीज का पक्का भरोसा है कि **ऐसे संत को याद करके स्वामिनारायण-स्वामिनारायण करके कोई भी काम शुरु करेंगे, हमारे हक में नहीं होगा तो हर जगह से ऐसे फोर्सीस खड़े हो जाएंगे कि हम आगे कदम उठा ही नहीं पायेंगे। भगवान रोक लेंगे वहाँ। पूरी ग्रीन लाईट्स मिलती जाए, समझ लो कि अपना काम सही रास्ते पर है।** बस....खाली तन, मन व धन नहीं, आत्मा से भी सुखी हों..... यही नये साल की शुभकामना !'

प.पू. गुरुजी की आशिष वर्षा के बाद सभी मंदिर के हॉल में अन्नकूट महाभोग का दर्शन व आरती करने गए। मंदिर के सिंहासन को आज फूस की झोंपड़ी का आकार देकर सजाया था और....ठाकुरजी तो जैसे आज भक्तों को रीझ कर अनोखी स्मृति देने मनमोहक राजस्थानी पोशाक व पाघ पहने तैयार हुए थे.... बस उन्हें निहारा करने का ही मन हुआ करता था। थाल व आरती के समय तो जैसे सारे वातावरण में दिव्यता भर गई..... कई भक्तों की आँखे नम हो आई.... सभी भावविह्वल-भावविभोर हो गए...पू. निमित्तस्वामी और प.भ. राकेशभाई ने प.पू. गुरुजी की निश्रा में ठाकुरजी का थाल गाकर महाभोग लगाया। फिर–प.पू. गुरुजी के साथ **अमदावाद से खास इसीलिये आये प.भ. एन.जी.पटेल साहेब ने मध्यमंदिर में बिराजे श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की आरती उतारनी प्रारंभ करी** और...पू. निमित्तस्वामी, पू. सुहृद्स्वामी, पू.संकल्पस्वामी, प.भ. मल्कानी साहेब, प.भ. पवन पुरीजी, प.भ.अरविन्द सेठजी व अन्य कई हरिभक्तों ने मिलकर ठाकुरजी की आरती सम्पन्न करी। आरती के पश्चात् सभी हरिभक्तों ने कढ़ी, चावल, सब्जी का महाप्रसाद पाकर स्वयं को धन्य किया और नए वर्ष की नई उमंग से अपने-अपने घर को गए.... बाद में दूर के प्रांतों से आए हुए व मंदिर में रोजमर्रा आने वाले करीब 150-200 हरिभक्तों ने मिलकर प.पू. गुरुजी के सन्निध्य में देर रात तक ब्रह्म किल्लोल किया....

✡

प.पू. गुरुजी का मुंबई, राजकोट, अमदावाद विचरण

प.पू. पप्पाजी की बीमारी के समाचार जब से मिले थे, तब से प.पू. गुरुजी रोज फोन पर तो उनकी तबियत बारे जान लेते। लेकिन तब भी भीतर में प.पू. पप्पाजी के रु-ब-रु दर्शन करने की उनकी खूब तमन्ना हो रही थी। और.... जब मुंबई में प.पू. पप्पाजी की 'एन्जोग्राफी' कराने की सूचना मिली, तो प.पू. गुरुजी ने उसी दिन रात को ही मुंबई हवाई - जहाज से जाने का प्रोग्राम बनाया। पर, प.पू. पप्पाजी की आज्ञा से उन्होंने 5 नवम्बर की राजधानी से निकलने का प्रोग्राम ज़ारी रखा।

4 नवम्बर '98 की सुबह यानि–प.पू. पप्पाजी की एन्जोग्राफी वाले दिन सभी हरिभक्तों ने प.पू. गुरुजी की निश्रा में सुबह 9.00 से 12.00 सामूहिक जपयज्ञ किया। 5 नवम्बर की शाम को राजधानी एक्सप्रेस से निकलकर प.पू. गुरुजी 6 नवम्बर की सुबह मुंबई पहुंचे। तीर्थस्थल ताड़देव में स्नानविधि करके वे सीधे जुहू में प.भ. जे.एम. पटेल साहेब के यहां प.पू. पप्पाजी के दर्शन के लिए पहुंचे। वहां प.पू. पप्पाजी की तबियत के समाचार जाने। यूं दूसरे दिन यानि–7 नवम्बर को भी प.पू. गुरुजी सुबह ही तैयार होकर प.भ. पटेल साहेब के यहाँ प.पू. पप्पाजी के दर्शन करने पहुंच गए। प.पू. पप्पाजी की मद्रास में 17 नवम्बर को 'एन्ज्योप्लास्टी' कराने का निर्णय तो लिया ही गया था। फिर भी, सेकेण्ड ओपिनियन के लिए डॉ. गांधी जो कि प.पू. गुरुजी की बाईपास सर्जरी के समय कन्सल्टन्ट फिज़ीशियन थे, उनकी राय भी ली गई ! प.पू. पप्पाजी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए हमें तीव्रता से नियमित भजन करना है और प्रार्थना करनी है कि प.पू. पप्पाजी अधिक वर्षों तक हमारे बीच स्वस्थ रूप से नयन गोचर रहें।

7 नवम्बर की सायं ताड़देव में 'भजन संध्या' में मुंबई के हरिभक्तों को प.पू. गुरुजी के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ मिला। वहां सभा में प.पू. गुरुजी ने बात करते हुए कहा–'....**कई लोग ऐसा सोचते हैं कि प्रगट स्वरूप का अर्थ है स्वरूप का स्थूल देह से हमेशा हमारे साथ रहना। यह सही नहीं है। जिन्हें प.पू. काकाजी से हेत हुआ है, दर्शन हुआ–संबंध हुआ; उनके लिए काकाजी के शरीर छोड़ देने के बाद किसी और स्वरुप से जुड़ ही जाना अनिवार्य नहीं है। प्रगट स्वरूप पूरी जिन्दगी हमारे साथ बिताएं ऐसा जरूरी नहीं। एक बार भी उनका दर्शन हो गया वह काफी है, फिर उसे धार कर जीना शुरु कर दें, तो वे हमारे लिए सर्वदा प्रगट और प्रत्यक्ष हैं।**

.....हम कहते जरुर हैं कि स्वामी हमारा सब तुम्हारा है, पर स्वरूप से कुछ ना कुछ रिज़र्वेशन रखते हैं; अन्तराय रखते हैं। यह छोड़ेंगे तभी हमारा काम बनेगा।'

'सर्वदेशीयता' का मर्म समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा कि–**'प.पू. काकाजी 'सर्वदेशीय' अवश्य थे, पर हम सभी जानते हैं कि वे सिर्फ प.पू. योगीजी महाराज के ही थे और उन्हीं के संबंध से वे स्वामिनारायण के अल्पसंबंध वालों के-सभी के थे–उनका सर्वस्व सभी का था। हम सर्वदेशीयता की आड़ में हमारी अच्छाई पेशी के हेतु हर एक के पास दौड़ते तो नहीं रहते या चापलूसी तो नहीं करते? यह हमें अपने भीतर में झांकना होगा। हमारी सर्वदेशीयता स्वरूपलक्षी होनी चाहिए ना कि स्व-लक्षी !'**

राजकोट के प.भ. कानजीभाई जो पिछले दो साल से अन्नकूट के समय दिल्ली मंदिर आते थे, उनके व पुराने जोगी प.भ. वल्लभदास फळदु (वी.एम.) के अत्यधिक आग्रह के कारण प.पू. गुरुजी ने मुंबई से राजकोट जाने का भी प्रोग्राम बनाया था। सो, 7 नवम्बर की रात को मुंबई से गुजरात मेल द्वारा प.पू. गुरुजी अमदावाद के लिए रवाना हुए। 8 नवम्बर की सुबह अमदावाद में पुराने जोगी प.भ. पकाई साहब के यहां नहा-धोकर कार द्वारा राजकोट के लिए निकले। 'बाईपास सर्जरी' के बाद प.पू. गुरुजी को थकावट जल्दी हो जाती है, पर फिर भी भक्तों की भावना के वश होकर-मुक्तों को राजी करने वे देह को भी गिनते नहीं हैं। दोपहर को राजकोट पहुंचे.... प.भ. कानजीभाई व प.भ. वी.एम. की उमंग-उत्साह तो देखते ही बनता था, मानो खुशी के मारे

उनके पांव जैसे जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि प.पू. गुरुजी सच में उनके यहां पधारे हैं। प.पू. गुरुजी राजकोट में आ रहे हैं, इस बारे पहले से ही सूचित होते जुनागढ़ से पू. आणंदबापा भी यहां आ पहुंचे थे जो कि अमदावाद भी गुरुजी के साथ गये। प.भ. कानजीभाई ने अपने घर ही प.पू. गुरुजी व भक्तों के रुकने की व्यवस्था करी थी। सायं गोंडल मंदिर एवं अक्षरदेरी के दर्शन कराने की व्यवस्था भी उन्होंने कर रखी थी। प.पू. गुरुजी के साथ सब ने गोंडल मंदिर में आरती के दर्शन किए और अक्षरदेरी की परिक्रमा की। गोंडल अक्षरमंदिर– जहां 38 साल पहले प.पू. गुरुजी ने पार्षदी दीक्षा ली–उसके सालों के बाद दर्शन किए थे सो दर्शन करते हुए उनका मुख अत्यधिक भावुक था। फिर, राजकोट में पू. कृष्णजी अदा की देरी और महाराज का प्रसादी का स्थान–बेरी का पेड़ जिसने अपने कांटे गिरा दिए थे, उसके दर्शन किए। वहां से राजकोट वापिस लौट कर प.भ. वी.एम. के घर होते हुए योगीधाम में पू. त्यागवल्लभस्वामी, पू. कुंवरजीबापा, पू. जयरामबापा, पू. अश्विनभाई और अन्य हरिभक्तों के दर्शन किए।

दूसरे दिन 9 नवम्बर की सुबह प.भ. कानजीभाई प.पू. गुरुजी को अपनी फैक्टरी और ऑफिस ले गए। वहां से वापिस आकर प.भ. कानजीभाई के यहां एक छोटी सभा का आयोजन था। उसमें पू. त्यागवल्लभस्वामी व प.भ. कानजीभाई के अन्य परिचितों व हरिभक्तों ने सभा में भाग लिया। प.पू. गुरुजी ने बात करते हुए कहा–

'......सच्चे साधु को पहचानने के लिए जांच लो कि–
–उसका मूल गुणातीत की गुरु-शिष्य प्रणाली से है ?
–उसके गुरु और उसके द्वारा तैयार करे समाज को देखो।
–जिसके पास दिल और दिमाग दोनों झुक जाएं वही सच्चा साधु है, जहां प्रभु की शक्ति पूर्णरूप से काम कर रही है।'

सभा के बाद प.पू. गुरुजी ने अमदावाद के लिए प्रस्थान किया। प.भ. कानजीभाई अत्यधिक भावविभोर होकर राजकोट से 15 किलोमीटर तक–कुवाडवा तक प.पू. गुरुजी को छोड़ने आए। प.भ. कानजीभाई द्वारा आत्मीयता से करी गई सेवा, उनकी भक्तिभावना, प्रेम व मुमुक्षता सभी को भीतर तक स्पर्श कर गई ! यहां तक कि प.पू. गुरुजी की भी आँखें नम हो आईं। भगवान रखे संत तो भक्तवत्सल हैं और भक्तों की भक्तिभावना की डोर से हमेशा बंधे हुए हैं....

राजकोट से निकल कर शाम को करीब 8.00 बजे प.पू. गुरुजी सीधे प.भ. एन.जी. पटेल साहेब के यहां पहुंचे.... अमदावाद के हरिभक्त भी वहां दर्शन के लिए आ गए थे। सभी ने आनंद किया और प्रसाद लिया। 10 नवम्बर की सुबह प.पू. गुरुजी पूजा में बैठे, धून्य करी.... पू. निमित्तस्वामी, पू. राकेशभाई ने भजन गाये। फिर प.पू. गुरुजी ने सत्संग की थोड़ी बातें करी।

शाम को प.भ. एन.जी. पटेल साहेब के घर के प्रांगण में एक छोटी सत्संग सभा का आयोजन था। प.भ. पटेल साहेब ने अपने नजदीकी रिश्तेदारों व मित्रजनों को प.पू. गुरुजी के दर्शन व सत्संग का लाभ लेने आमंत्रित किया था। शाम को करीब 7.00 बजे भजन-धून्य से सभा प्रारंभ हुई। प.भ. भाविनभाई, प.भ. राकेशभाई ने प.पू. गुरुजी द्वारा हुए अपने अनुभव बताये। फिर प.पू. गुरुजी ने भी कथावार्ता का सबको लाभ दिया.....

11 नवम्बर की सुबह पूजा-ध्यान आदि के बाद प.पू. गुरुजी डॉक्टर के पास गये। पटेल साहेब भी साथ में ही गए। प.पू. गुरुजी दो दिन वहां रहे, इस दौरान पटेल साहेब ऑफिस भी नहीं गए। प.पू. गुरुजी के पास ही रहे। पटेल साहेब की व परिवार की आत्मीयता देखते ही बनती थी। हर एक ने वहां अपनापन महसूस किया... हर प्रकार की भौतिक संपत्ति होते हुए लेशमात्र भी अभिमान नहीं था। इसी दिन शाम की राजधानी एक्सप्रेस से प.पू. गुरुजी दिल्ली आने के लिए रवाना हुए। समस्त अमदावाद मंडल ने खूब भावभीनी विदाई दी। पटेल साहेब व अमदावाद के सभी हरिभक्तों की भक्तिभावना, प्रेम व सेवा-भावना को अन्तर से वन्दन !

प.पू. गुरुजी ने अमदावाद–प.भ. पटेल साहेब के यहां जो बलभरी बातें करी उसका सारांश निम्न है–

'चमत्कार वगैरह के होने से–दिखाने से किसी साधु या किसी विभूति का भगवान का रूप होने का दावा नहीं करना। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की एक बात है–**अंतर पकड़े यानि–जो अंतर के दोष देखे–**अंतर में चैतन्य पर जो धब्बे लगे हैं, अंतःकरण में जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, तृष्णा दोष पड़े हैं, उन्हें एक्स-रे की भांति क्लीयर देखे और **टालने का बल दे–वहां सच में भगवान का प्रगटपन होना मानना।** स्वामिनारायण संप्रदाय की विशेषता यही है कि ऐसे निर्मल साधुओं का वारसा धरती पर अखंडित रखा। **भगवान कोई हुआ नहीं है, कोई हो नहीं सकता-नारायण तो एक ही है। पर, नारायण जिसमें अखंडित निवास करके रहें ऐसे गुणातीतभाव में–स्थिति में अखंड रहने वाले–जिसमें परब्रह्म तत्त्व अखंडित रहे ऐसे अनेक हो सकते हैं। उस पर किसी एक का ही इजारा हो–ऐसा नहीं।** हाँ, एक बात मैं मानता हूं कि सिंहनी का दूध सुवर्णपात्र में ही टिक सकता है। यूं उसके टोले नहीं होते, पर एक ही हो ऐसा भी नहीं। जैसे कि हम कहते हैं कि हमारे पू. पप्पाजी, पू. हरिप्रसादस्वामिजी, पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. महंतस्वामिजी ऐसे हैं। **ऐसे** पावरहाऊस बने **संतों में से हम जहां जुड़े हुए हों, उसकी स्मृति और मंत्र स्वामिनारायण रटेंगे तो सहज ही हमारे योग और क्षेम वे संभालेंगे.......**

हम भगवान के रास्ते चलेंगे तो व्यवहार अपने आप पीछे घिसटता हुआ आयेगा। अर्थात्–व्यवहार से तो सुखी रहेंगे ही।

पर साथ ही साथ साधु का एक उद्यम रहेगा कि वो हमारे चैतन्य का शुद्धिकरण करेगा। हम दिल्ली सेन्टर में ज्यादातर सोशियल एक्टीवीटी नहीं करते, क्योंकि मैं ऐसा मानता हूँ कि **हमारी जीवन पद्धति से ही ऐसी सेवा बन जानी चाहिए कि जो भी हमारे टच में आए उसकी महत्वाकांक्षा का बिन्दु-सेन्टर ऑफ लाईफ बदल जाना चाहिए।** इससे संसार छूट नहीं जायेगा। **पर जगत व भक्त की रीति-नीति से फर्क इतना पड़ जायेगा कि भक्तों के लिए शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध प्रभु संबंधित हो जायेंगे।** उसे एक ही इच्छा रहेगी कि मैं कब संत का दर्शन करूँ, कैसे उनकी सेवा करूँ, बस संत की महिमा की बातें करा करूं.....

संतों का काम यह है कि हमारी प्रकृति व प्रारब्ध बदल दें.... हमें किसी संस्था में नहीं बंधना है। संस्था के व्यवहारों में नहीं बंधना है। अगर संस्था या उसके व्यवहारों में पड़ने गये तो जो चीज हमें पानी है वो नहीं पा सकेंगे। **सो, हमें तो केवल सच्चे साधु में बंधना है।**

........बड़े पुरुष हमें कुछ देने से पहले थोड़ा कुछ हमसे लेते हैं। बहुत थोड़ा लेते हैं। अपना सारा लूट नहीं लेते। **हमें झूठा डर लगा रहता है कि साधु के पास जायेंगे और वो हमसे कुछ ज्यादा सेवा माँगेंगे, पर सच्चा साधु तुम्हें बहुत कुछ दे देने के लिए थोड़ी मन की कसनी देगा।**

...... एक सेवक ने पू. जागास्वामी से अपने भीतर उठते भयंकर काम-वासना के दोषों की बात करी। पू. जागास्वामी ने उस सेवक को समर्थ गुरु पू. गुणातीतानंदस्वामी से दिल की प्रमाणिकता से दीन होकर निष्कपट होने कहा। **यूं हमें ऐसे के साथ संबंध रखना जो इस प्रकार सच्चे साधु के साथ हमारा संबंध दृढ़ कराता रहे।** सेवक ने पू. जागास्वामी के कहे मुताबिक स्वामी को कहा कि–'मैं जैसा भी हूं तुम्हारा हूं'; तो उसके भीतर की सारी गटर शांत हो गई !

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है कि– ऐसे संत के प्रति लगाव हो, उसकी बात का विश्वास हो और निष्कपटभाव हो तो अपने भीतर की सारी गंद निकल जाए।

हम **संत** से अपने मन के गटर की बात करते हैं, तब संत **हमारे हृदय को शांत भी कर देता है। पर फिर-बाद में संत की सत्ता का स्वीकार ना करके मन के साथ मिलकर चालाकियां खेलने लग जाते हैं।** तब भी साधु हमारी वो चीजें देखता नहीं, बल्कि अपने संबंध में रख-रख कर हमारी चेतना का संबंध प्रभु के साथ कैसे दृढ़ हो बस उसी में लगा रहता है। **साधु यानि–परोपकारी स्वरूप** ! पू. भगतजी महाराज का खूब बीमार होते हुए भी अन्नकूट के दर्शन करने जाना और कहना कि– आज जिस-जिसने इस बूढ़े के चेहरे का दर्शन किया, उन सभी को अन्त समय में महाराज लेने आयेंगे–यह कैसी परोपकारी भावना होगी ?

भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरिता–विशिष्टता कहो कि उन्होंने ऐसे संतों द्वारा अखंड ज्योति–एक जीवंत परम्परा धरती पर रखी। यह और कहीं दिखाई नहीं पड़ेगी। गुजरात की धरती का तो बहुत बड़ा सौभाग्य है कि ऐसे संतों प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. महंतस्वामिजी, प.पू. प्रमुखस्वामिजी जैसे विचर रहे हैं। बस इस गंगोत्री में हम नहाया करें.... नहाना यानि– उनके संबंध से हम सदा पवित्र रहें.... **पवित्रता** की व्याख्या **महर्षि अरविंद** ने करी कि **कोई भी व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ, प्रसंग का हम पर प्रभाव ही ना पड़े, वह सच्ची पवित्रता है।** कुछ भी मुश्किल आये तब जिस संत को हम मानते हों उसकी स्मृति करके 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करें.... जो बना हो उसे भूल जाएं और वर्तमान में शिक्षापत्री के कायदे से जीयें.... और भविष्य की चिंता उन पर छोड़ दें। बस, नए वर्ष में ऐसा बुद्धियोग प्रभु हम सभी को दें.... नरसिंहभाई के यहां हमें हमारा कुटुंब सा–अपना घर सा लगा है। यह नई पहचान नहीं होगी, बल्कि पुराना संबंध महाराज ने रिवाईव कराया, उनका धन्यवाद करें और अब सच्चे सुख के भोक्ता बनें........'

✡✡✡✡✡

'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

✶ स्वरुप का ज्ञान दृढ़ करना।
– मुझे मिले सर्वोपरि प्रभु मानवस्वरूप में धरती पर प्रगट हैं।
– वो ही सभी के कर्ता-हर्ता हैं।
– उनकी सत्ता सर्वोच्च है। वे कभी भी मेरा अहित नहीं होने देंगे। यह ज्ञान पक्का करना है।

✶ प्रगट स्वरूप ही रसघन मूर्ति का सुबह उठते ही व रात को सोते समय पाँच मिनिट तो ध्यान करके स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भजन जरुर-जरुर एकचित्त से कर ही लेना। असल में तो पल-पल अखंड उसकी-कोन्शियसनेस में रहना है, पर यह बड़ा कठिन है।

✶ संकल्परहित होकर हम भजन करें। भजन करते समय जो विचार आएं उन्हें ठकुरा दें। धीरे-धीरे वो मन अपने आप हार जायेगा.... जब तक हम उन विचारों का स्वीकार करते रहेंगे, उसके साथ मिलजुल जायेंगे, वो हम पर हावी होता रहेगा। उस विचार को पकड़ें ही नहीं और निर्गुण संत की स्मृति में डूबे रहेंगे तो आखिर तो मन जड़ है व ऐसे संत चैतन्यस्वरूप हैं। तो जीत तो चैतन्यस्वरूप की ही होगी।

- ✷ प्रार्थना करने से जीव को अमाप बल मिलता है। जीव में बल मिलने से वृत्तियाँ, इन्द्रियाँ-अंतःकरण हम पर हावी नहीं होंगे। जितना हम संत के साथ जुड़ेंगे, जुड़ना यानि- उसकी तरफ निगाह रखकर जीयेंगे उतना जीव बल को पायेगा। जितना अपने मनमाने ढ़ग से जीयेंगे उतनी मान की वृत्ति बल को पायेगी।
- ✷ चैतन्य की सभानता दृढ़ करनी यानि- मैं प्रत्यक्ष स्वरूप का दास हूँ। मैं अब जगत का नहीं हूँ। अब मेरा स्टेट्स बदल गया। यह सभानता रखनी। जैसे किसी गरीब लड़की का बहुत पैसे वाले के साथ ब्याह हो जाये तो उसका खाना-पीना, उठना-बैठना, बोलना-चलना आदि बदल जायेगा। उसकी एक कोन्शियसनेस डेवलप हो जाती है कि मैं अब गरीब घर की लड़की नहीं बल्कि धनवान की घरवाली हूँ।
- ✷ कई बार हमें जो दूसरों का चुभता रहता है, हम उसकी टीका-चर्चा करते हैं, झंझट करते रहते हैं। दरअसल हम उसके जैसा कर नहीं पाते। उसकी जलन के कारण खोदते रहते हैं कि फलां तो ऐसा है, फलां तो वैसा है।
- ✷ प्रगट के उपासक के लिए सबसे बड़ी शर्त यही है कि किसी की झंझट ना करें। भले एकादशी ना करो, भले माला कम फिराओ। उसका भी हर्जा नहीं, पर दूसरों की झंझट करी इसका अर्थ यही कि हमने प्रगट प्रभु के कर्ता हर्तापन, सत्ता का स्वीकार किया ही नहीं, उसका द्रोह किया। किसी की टीका-चर्चा करी उसका अर्थ यही कि हमने स्वरूप की ही टीकाचर्चा की है।
- ✷ हम दूसरों की झंझट करते रहते हैं, उसी में हमें स्वाद आता है और फिर ब्लेम स्वरूप को देते हैं कि हमारा कुछ किया नहीं। पर हमने इधर-उधर दूसरों का ही देखते रहने के सिवा और कोई धन्धा किया है?
- ✷ हमें सिर्फ स्वरूप की तरफ निगाह रखकर जीना है। जिसे जो झंझट करनी हो वो करा करे, पर हमें अपनी साधुता नहीं छोड़नी है।
- ✷ हमें शेर की तरह जीवन जीना है, कुत्ते की तरह नहीं। कुत्ता लकड़ी को काटेगा, जबकि शेर सीधा जिसके हाथ में लकड़ी होगी उस पर ही छलांग लगायेगा। यानि-हर एक पर कर्ता-हर्तापन तो प्रभु का ही है; तो जो भी माँगना हो– बजाय कि किसी से- उससे ही माँगो।
- ✷ जो नए आते हैं उन्हें शांति व दिव्यता का अनुभव होता है,क्योंकि तब वो इधर-उधर देखते नहीं हैं और हम पुराने इधर-उधर ही देखते रहते हैं। हम ठठेरे की बिल्ली की तरह ढीठ हो गए हैं कि ये बातें तो होती ही रहती हैं..... पर जो ये बातें लेकर चलने लग पड़ते हैं वो सुख, शांति, आनंद प्राप्त करते हैं।
- ✷ काकाजी ऐसे थे, काकाजी वैसे थे। यह गाया करने के बजा़य अब हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि उनके होकर, उनके सिद्धान्त के अनुसार अन्तर व अंतरायरहित का संबंध दृढ़ करके जीने लग जायें।

जानकारी हेतु

प.पू. पप्पाजी की 'एन्ज्योप्लास्टी' अपोलो अस्पताल–चिन्नई में डॉ. मैथ्यू द्वारा अच्छी तरह हो गई है। प.पू. पप्पाजी का स्वास्थ्य अच्छा है और कुछ दिन वहीं ठहर कर–मुंबई आराम करेंगे।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.30.11.98	सोमवार	–	मोक्षदा एकादशी,व्रत
(2)	दि.14.12.98	सोमवार	–	सफला एकादशी,व्रत
(3)	दि.16.12.98	बुधवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(4)	दि.29.12.98	मंगलवार	–	पुत्रदा एकादशी,व्रत
(5)	दि.02.01.99	शनिवार	–	पोषी पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षादिन

Air Mail
'Bhagwatkripa' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting** B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Pakaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393

TO,